हिन्दी प्रतिष्ठा
सेम I
प्रश्न पत्र
पूर्व मध्यकालीन हिन्दी काव्य

डॉ० अरविन्द कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एन० एस० कॉलेज
जहानाबाद

## सूरदास

अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगेहि मीठे फल को रस अन्तरगत ही भावै।।
परम स्वादु सबही सु निरन्तर अमित तोष उपजावै।
मन बानी को अगम अगोचर सो जानै जो पावै।।
रूप रेख गुन जाति जुगुति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावै।
सब बिधि अगम बिचारहि तातै सूर सगुन लीला पद गावै।।

प्रसंग — सूरदास का प्रस्तुत पद विनय का पद है। प्रस्तुत पद में सूरदास ने भक्ति से सम्बन्धित है। प्रस्तुत पद में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्रह्म के साकार रूप में अपने विचार [illegible] ब्रह्म के निराकार रूप में अपने विचार [illegible] सगुण भक्ति की सरलता और निर्गुण भक्ति की दुरूहता को यहाँ रेखांकित किया है। यहाँ सूरदास ने निर्गुण भक्ति से सगुण भक्ति को श्रेयस्कर बताया है।

सामान्य अर्थ, व्याख्या — सूरदास कहते हैं कि निर्गुण-निराकार ईश्वर की गति-विधि का आसान नहीं है। उसको जानना एवं समझना या कहना मुश्किल है। गति के बारे में कुछ भी कहना नहीं जब उसकी गति के बारे में जब ऐसा कुछ भी नहीं कह सकते तो उसकी भक्ति तो और भी कठिन है। उस निर्गुण ब्रह्म को केवल अनुभव किया जा सकता है। उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। यह ठीक वैसी ही बात है जैसे कोई गूंगा आदमी किसी मीठे फल की मिठास को अनुभव तो करता है पर उस अनुभव को व्यक्त नहीं कर सकता। उसी तरह निर्गुण ब्रह्म की भक्ति की आनन्दानुभूति को व्यक्त नहीं किया जा सकता है। यह [illegible]

विशेष :—